E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

सन्त परम्परा द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक चेतना के प्रमुख तत्त्व

शुभकीर्ति त्रिपाठी
शोध छात्रा
संगीत विभाग,
दयालबाग डीम्ड यूनिवर्सिटी,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

इस संसार में प्रारंभ से धर्म के संबंध में रीति – रिवाजों व कर्मकांडों के संबंध में समाज में बहुत ही अंधविश्वास व पाखंड का बोलबाला था, किंतु जब संत–परंपरा का आविर्भाव हुआ तो जो महान संत इस धरती पर अवतरित हुए उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों का घोर विरोध करते हुए लोगों का उचित मार्गदर्शन किया , उन्हें अध्यात्म के पथ पर चलने के लिए अग्रसर किया और उस काल में आप संतों ने आध्यात्मिक पदों की रचना की , जिससे सामाजिक लोग अत्यंत लाभान्वित हुए। अध्यात्म के जो वास्तविक तत्व हैं , उनसे समाज को पदों द्वारा साहित्य के रूप में अवगत कराया जिसका लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

मुख्य शब्द : अध्यात्म, धर्म, चेतना, सन्त।

प्रस्तावना

यदि सन्त परम्परा की बात करें, तो सभी धर्मों के बाद यह परम्परा प्रचलित हुयी। सन्त मत या सन्त परम्परा से तात्पर्य हैं– 'संतो का मार्ग', 'सत्य का मार्ग' सही और आशावादी पथ या 'संतो की राय'। यह शब्द संस्कृत की धातु 'सद्' से बना है और इस शब्द का प्रयोग कई अर्थों में हुआ है, जैसे सत्य, वास्तविक, ईमानदार सही। लेकिन इसका मूल अर्थ है, सत्य को जानने वाला या जिसने अंतिम सत्य का अनुभव कर लिया हो। संत परम्परा जब प्रारंभ हुई, इसमें संतों का अपना सामाजिक–धार्मिक व्यवहार शामिल था। इस परम्परा के संतों ने समाज में व्याप्त झूठ, पाखंड, आडंबर, कर्मकाण्ड आदि कुरीतियों का घोर विरोधा किया, आध्यात्मिकता को समाज में स्थान दिया। सत्य के मार्ग से विचलित मनुष्यों को अध्यात्म का मार्ग दिखाया। इस परम्परा के अन्तर्गत सर्वप्रथम दो परम्पराओं का वर्णन किया जा रहा है–

1. कबीर परम्परा या कबीर पंथ
2. सिक्ख धर्म परम्परा

कबीर परम्परा या कबीर पंथ

यह पंथ या कबीर की शिक्षाओं पर आधारित एक पंथ है, जिसकी स्थापना स्वयं सद्गुरू कबीर जी ने अपने परमशिष्य धर्मदास के द्वारा की। यह पंथ या परम्परा दार्शनिक और नैतिक शिक्षा पर आधारित है। आपकी परम्परा में हिन्दू, मुस्लमान, बौद्ध आदि सभी धर्मों के लोग शामिल हैं। आपका जन्म 1455 वि. में जेठ सुदी बरसायत (वट सावित्री) को पूर्णिमा के दिन काशी के लहरतारा तालाब में एक कमल के पुष्प पर एक गरीब नीरु–नीमा नामक दम्पत्ति को प्राप्त हुए थे। काजी द्वारा आपका नाम कबीर रखा गया, जिसका अर्थ श्रेष्ठ होता है।

आपने सच्चे धर्म का वास्तविक स्वरूप संसार के सम्मुख रखा और स्पष्ट किया, संसार, जीवकाल और माया के चक्र में फँसा है। मन जो काल का अंश है, जो सदैव अशुभ कार्य करने को तत्पर रहता है, जिसके कारण न तो, जीव को शान्ति मिलती है, न मोक्ष।

आपने समाज में हो रहे, आडम्बरों और पाखण्ड का विरोध किया, जाति–पात का खण्डन किया।

आपने समस्त जीवों में आध्यात्मिक चेतना को जागृत किया। आपने कुछ प्रमुख आध्यात्मिक चेतना के तत्त्वों को समस्त संसार के समक्ष उजागर किया, जो इस प्रकार हैं–

आध्यात्मिक चेतना के तत्त्व

1. निर्गुण साधना पर बल
2. जीव–परमात्मा का अंश
3. भौतिकवाद का सिद्धांत
4. माया का खंडन
5. सुरत शब्द योग का मार्ग

कबीर साहब द्वारा प्रदत्त पदों में आध्यात्मिक चेतना

आपने अपने पदो में कथित ध्यान, सुमिरन, निगुण ब्रह्य आदि अलौकिक तत्वों को अपने पदों में वर्णित किया है। और इसके माध्यम में जनमानस में अध्यात्मिक चेतना का जागृत किया है। जो आपके पदों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है–

1. दुलहनी गावहु मंगलचार।
हम घरि आए हो राजा राम भरतार ।।टेक।।
तन र ति कर मैं मन रत करिहूँ पंचतत बाराती।
रामदेव मोरे पाहुनें आए हैं, मैं जोबन मैमाती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहू, ब्रह्य वेद उचार।
रामदेव संगि भाँवरि लैहूँ, धनि धनि भाग हमार।।

यहाँ कबीर साहन ने 'राम' शब्द को निर्गुण रूप में माना है, इनकी साधना पर बल दिया है।

2. घर–घर दीपक बरै, लखै नाहिं अंध है।
लखत–लखत लखि परै, कटै जम फंद है।।
कहन सुनन कहु नाहिं, नहीं कहु करन है।
जीते जी मरि रहै, बहुरि नहिं मरन है।।
जोगी पड़े वियोग, कहैं घर दूर है।
पासहि बसत हजूर, तू चढ़त खजूर है।।
बाहॅमन दिच्छा देता, घर घर घालि है।
मूर सजीवन पास, तू पाहन पालि है।।
ऐसन साहब कबीर सलोना आप हैं।
नहीं जोग नहिं जाप पुन्न नहीं पाप है।।

3. अवधू माया तजी न आई।
गिरह तज के बस्तर बाँधा, बस्तर तज के फेरी।
काम तज तें क्रोध न जाई, क्रोध तज में लोभा।
लोभ तजे अहंकार न जाई, मान–बड़ाई–सोभा।
मन बैरागी माया त्यागी, शब्द में सुरत समाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह गम बिरले पाई।।

4. चंदाझलकै यदि घर माहीं। अंधी आँखन सूझे नाहीं।।
यहि घर चंदा यहि घर सूर। यहि घट गाजै अनहद तूर।।
यहि घट बाजै तबल–निशान। बहिरा शबद सुने नहिं कान।।
जब लगि मेरी मेरी करै। तब लग काज एकौ नहिं सरै।।
जब मेरी ममता मर जाय। तब प्रभु काज सँवारै आय।।
ज्ञान के कारण करम कमाय। होय ज्ञान तब करम नसाय।।
फल कारन फूलै बनराय। फल लागै पर फूल सुखाय।।
मृगा हास कस्तूरी बास। आप न खोजै खौजे घास।।

5. कहें कबीर तहँ रैन–दिन आरती
जगत के तख्त पर जगत सॉई।
कर्म और भर्म संसार सब करत है
पीव की परख कोई प्रेमी जानै।।
सुरत और निरत धार मन में पकड़कर
गंग और जमन के घट आनै।
नीर निर्मल तहाँ रैन–दिन झरत है
जनम औ मरन तब अंत पाई।।

अतः स्पष्ट है, कबीर साहब द्वारा रचित इन आध्यात्मिक पदों में आध्यात्मिक चेतना के तत्व स्वतः ही परिलक्षित हो रहे हैं, इन पदों में क्रमशः निर्गुण ब्रह्य के रूप में 'राम' शब्द का वर्णन किया है। ये 'राम' अगम, अगोचर, अविनाशी हैं। इसी क्रम में आपने माया का खंडन किया है, कि काम, क्रोध, लोभ मोह, अहं आदि का त्याग करने के लिए बताया है।

इसी क्रम में आपने पद में यह भी वर्णित किया है, कि मनुष्य या जीव को जब तक आंरिक ज्ञान नहीं होगा, वह बाह्य भौतिक संसार से मुक्ति नहीं पा सकता। उसी पाकर जीव को परम सत्य को जानने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन इसके लिए उसे हर प्रकार के कर्मबंधन से मुक्त होना पड़ेगा। इसके लिए आंतरिक साधना अत्यन्त आवश्यक हैं, जिसके लिए आपने सुरत–शब्द मार्ग बताया है। इसके अभ्यास द्वारा जीव अंतर में सभी लोकों का अनुभव कर परमात्मा को प्राप्त कर सकेगा। यही सार है, कबीर परम्परा का।

सिक्ख धर्म परम्परा

यह धर्म 15 वीं सदी में भारतीय संत परम्परा से निकला एक धर्म है। इस धर्म का सम्पूर्ण भारत में एक पवित्र एवं अनुपम स्थान है। सिक्खों के प्रथम गुरू, 'गुरूनानक देव' जी इस धर्म के प्रवर्तक है। आपका जन्म 15 अप्रैल 1469 ई. को लाहौर से तीस मील दूर तलबण्डी नामक ग्राम में एक खत्री परिवार में हुआ था। आज यह स्थान 'ननकाना साहिब' कहलाता है, और यह सिक्खों का पवित्र तीर्थ है। आपने ही इस परम्परा को सर्वत्र फैलाया, और स्वयं आपने ही गुरमत खोजा और गुरमत की शिक्षाओं को देश–देशांतर में प्रसारित किया। आपने अपने समय में भारतीय समाज में फैली कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखण्डों को दूर किया और प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे क दृढ़ नींव पर सिक्ख धर्म की स्थापना की। इस धर्म को और सुदृढ़ मजबूत और मर्यादा सम्पन्न बनाने के लिए, इस मत के पाँचवे गुरू, 'गुरू अर्जुनदेव' जी ने आदि ग्रन्थ का सम्पादन किया। इसमें गुरूओं की देववाणियाँ संग्रहित हैं।

सिक्ख धर्म परम्परा द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक चेतना के तत्व–

1. एक ओंकार की महत्ता
2. ब्रह्य की संकल्पना
3. नाम श्रवण का सिद्धान्त
4. चार पदार्थो की महत्ता
   a. ज्ञान पदार्थ या प्रेम पदार्थ
   b. मुक्त पदार्थ
   c. नाम पदार्थ
   d. जन्म पदार्थ
5. ईश्वर के निर्गुण निराकार स्वरूप की साधना
6. सतगुरू, सत्य खण्ड व सत्रू नाम का महत्त्व

गुरू नानक साहब द्वारा प्रदत्त पदों में आध्यात्मिक चेतना

गुरू नानक साहब जी ने अपने पदों द्वारा जनमानस में अध्यात्म के प्रति ज्ञान को जागृत किया है। आपने अपने पदों में नाम जाप, नाम सुमिरन पर बल दिया है और निराकार ब्रह्य के स्वरूप को भी शब्दों में सूक्ष्म रूप मे वर्णित किया है जो इस प्रकार है–

1. ओ अंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै।।
एका देसी एकु दिखायै एको रहिआ बिआपे।।
एका सुरति एका हि सेवा एको गुर ते जापै।।1।।
भलो भलो रे की रतनीआ।।
राम रमा रामा गुन गाउ।।

छोड़ि माइआ के धंध सुआउ।।1।।
2. पारब्रहमु परमेसुरू सुआमी दूरव निवारणु नाराइणे।।
सगल भगत जाचहि सुख सागर भवनिधि तरण हरि चिंतामणे।।1।।
दीप दइआल जगदीस दामोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे।।
ते निरभउ जिन स्रीरामु धि आइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे।।
जगदीसुर चरन सरन ओ आए ते जन भव निधि पारि परे।।
भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि क्रिपा करे।।2।।
3. अनहद शबद बाजै दिनु राती।
अविगत की गति गुरूमुखि जाती।
4.अदिसटु अगोचर पारब्रह्य मिलि साधूअकथ कथाइया था।
अनहद सबदु दसम दुआरि बाजिओ तह अमृत नाम चुआइआ था।

अतः स्पष्ट है, कि सिक्ख धर्म परम्परा में श्री गुरूनानक देव की द्वारा प्रदत्त वाणियों या पदों में आध्यात्मिक चेतना के तत्व दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस परम्परा में आपने सतगुरू की महत्ता, एक ओंकार, ब्रह्य, ईश्वर के निर्गुण निराकार स्वरूप की व्याख्या की है। शब्द, नाम– जाप या नाम सुमिरन को महत्त्व दिया है।

अध्ययन का उददेश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य है सन्त परंपरा के अन्तर्गत कबीर परंपरा व सिक्ख परंपरा में रचित आध्यात्मिक पदों में निहित आध्यात्मिक चेतना के जो तत्व हैं, उन्हें प्रकाश में लाना।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः इन दोनों ही सन्त परम्परा में प्रदत्त पदों से आध्यात्मिक चेतना का प्रभाव सम्पूर्ण जनसमाज पर पड़ा। लोगों ने इन परम्पराओं की शिक्षााओं व आध्यात्मिक तत्त्वों का जीवन में अनुसरण किया। साथ ही आध्यात्मिक चेतना का प्रचार–प्रसार जनमानस में हुआ। लोग प्रबुद्ध होकर सूक्ष्म तत्वों पर विचार करने लगे। जिससे विशिष्ट वर्ग के लोगों को लाभ हुआ, जो उनके आध्यात्मिक संज्ञान को बढ़ाने में सहायक बना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आचार्य द्विवेदी हजारी प्रसाद : कबीर (कबीर के व्यक्तित्व, साहित्य और दार्शनिक, विचारों की आलोचना), प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, पृ. 181, 182।

डॉ. बिम्ब्रॉ सीता : हिन्दी के निर्गुण संतकाव्य में संगीत तत्त्व, प्रकाशक : राधा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2014।

सिंह गुरूनाम : सिक्ख म्यूजिकोलॉजी (श्री गुरू ग्रन्थ साहिब और हाइम्स ऑफ द ह्यूमन स्प्रिट), प्रकाशक : कनिष्का, पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, 2001।

https://hi.m.wikipieda.org.